The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

48. बिहार में गठबंधन की संस्कृति: एक अनुशीलन

डॉ. मुकेश कुमार
बनचौरी, डुमरा
मो. 9471854380
ईमेल- munnasinghyadav1988@gmail.com

शोध-सार

*बिहार की गठबंधन की राजनीति लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में एक साथ बदस्तूर जारी रहती है। परन्तु परिणामों में परिवर्तन होते रहे है। **2005** के बाद बिहार का नेतृत्व जद (यू) के पास रही है चाहे गठबंधन कोई भी हो। नीतीश कुमार बिहार की गठबंधन संस्कृति के मुख्य किरदार हैं। विगत तीन दशकों से गठबंधन के केन्द्र में नीतीश कुमार ही हैं। वे दोनों गठबंधन के लिए आवश्यक हो जाते हैं एवं स्वीकार्य भी। **2017** में ठगा हुआ महसूस करने के बावजूद लालू यादव की राजद पुनः **2022** में नीतीश कुमार का नेतृत्व स्वीकार कर सरकार बनाती है तथा आम चुनाव **2024** के लिए नीतीश को आगे कर भविष्य के सपने पालने लगती है। नीतीश कुमार 'इंडिया' एलायंस के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा नरेन्द्र मोदी की सरकार को चुनौती देने के लिए विपक्षी दलों को एक साथ लाने के लिए प्रयासरत दिखते हैं। परन्तु गठबंधन की राजनीति के माहिर खिलाड़ी नीतीश कुमार **2023** में पुनः एनडीए में चले जाते हैं। 'इंडिया' एलायंस के लिए बन रहे आम धारणा को एक धक्का लगता है। आम चुनाव **2024** में एनडीए गठबंधन **40** में से **30** सीटों पर विजयी होती है। इसमें जद (यू) की बड़ी भूमिका रहती है। गठबंधन की संस्कृति पर इस चुनाव में भी विराम लगता नजर नहीं आ रहा है। इस तरह यह स्वीकार करने में कोई परहेज नहीं होना चाहिए कि बिहार में गठबंधन के लिए पर्याप्त कारण मौजूद है, यही कारण है कि यहां कि राजनीतिक सच्चाई गठबंधन में ही नजर आती है। राजनीति संभावनाओं का खेल अवश्य है लेकिन भविष्य में बिहार की राजनीति इन्हीं दो प्रमुख राजनीतिक गठबंधनों के बीच चलती रहेगी।*

मुख्य शब्द: गठबंधन, राजग, सेकुलर, बिहार, राजद, जनता दल (यू), यूपीए, संसदीय, महादलित, पसमांदा, महागठबंधन,

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

प्रस्तावना

वर्ष **2000** के विधानसभा चुनाव से बिहार की राजनीति में गठबंधन युग की शुरूआत हुई जो आजतक जारी है। राज्य की उभरती राजनीतिक प्रक्रिया में अधिक संभावना है कि आने वाले समय में भी गठबंधन की राजनीति जारी रहेगी। वर्ष **2000** के विधानसभा चुनाव **1999** के लोकसभा चुनाव की पृष्ठभूमि में सम्पन्न हुआ था। जिसमें बिहार के **54** सीटों में से **41** पर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन एनडीए विजयी हुई थी। तब केन्द्र में **1998** से चल रहे अटल बिहारी वाजपेयी की एनडीए सरकार अन्य नए सहयोगी के साथ फिर कार्य-भार संभाला था।

लोकसभा चुनाव के दौरान समता पार्टी और जनता दल का विलय हो चुका था। जिससे कर्नाटक में देवगौड़ा और अन्य राज्य के नेतागण नाराज हो गए थे। जनता दल का विभाजन जनता दल (यू.) और जनता दल सेकुलर (एस) हो गया। बिहार में चुनावी गठबन्धन का स्वरूप इस प्रकार रहा। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ जनता दल (यूनाईटेड) के अतिरिक्त बिहार पीपुल्स पार्टी (बिपीपा) शामिल थी। राजनीति इस दौरान पूरी तरह द्वि-धुरवीय थी तथा एनडीए को **324** में **199** विधानसभा सीटों पर बहुमत प्राप्त हुआ था। जिससे एनडीए के घटक दल वर्ष **2000** के विधानसभा चुनाव के पूर्व अति उत्साहित थे। उन्हें सत्ता करीब दिख रही थी। परन्तु उनमें आपसी प्रतियोगिता के कारण विधानसभा चुनाव के दौरान एनडीए घटक दलों ने तय सीटों से अधिक एक दूसरे के विरूद्ध उम्मीदवार खड़े किये। समता पार्टी और पुराने जनता दल के तत्वों के बीच अधिक कलह रहा। इसका परिणाम वर्ष **2000** के विधानसभा चुनाव के नतीजों पर पड़ा।

मुख्य भाग:

चुनाव में राष्ट्रीय जनता दल का मार्क्सवादी कम्युनिस्ट तथा क्रांतिकारी साम्यवादी पार्टी के साथ गठबंधन था। **1999** के विगत लोकसभा चुनाव में भी मार्क्सवादी एवं कम्युनिस्ट पार्टी का गठबंधन था जबकि क्रांतिकारी साम्यवादी पार्टी का गठन ही **1990** के दशक के पूर्वाद्ध में लालू प्रसाद के प्रेरणा से हुआ था। तब सीपीआई के एक तिहाई विधायकों ने लालू सरकार को समर्थन देने के लिए अपने दल का विभाजन किया था। विधायक दल के एक तिहाई सदस्यों द्वारा विभाजन की स्थिति में **91**वां संविधान संशोधन के पूर्व अयोग्यता का प्रावधान नहीं था। इस प्रकार राजद को **128** विधायकों का समर्थन प्राप्त था। इस प्रकार कांग्रेस**,** झामुमों एवं निर्दलीय की विखंडित विधानसभा में निर्णायक भूमिका थी। इनके बिना न तो राजद और न ही राजग सरकार बनाने की स्थिति में थी। राजद की सहयोगी रही कांग्रेस ने भी अलग चुनाव लड़कर **324** सीटों पर उम्मीदवार उतारकर अपना रूख स्पष्ट कर दिया था।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

राजद में जहाँ नेतृत्व स्पष्ट था। राबड़ी देवी सर्वस्वीकार्य थीं। दूसरी ओर एनडीए में नेतृत्व को लेकर कलह था। बड़ा दल होने के बावजूद भाजपा का राष्ट्रीय नेतृत्व, विशेषकर अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी समता पार्टी के नीतीश कुमार को गठबंधन का नेता बनाने का निर्णय कर चुके थे। नीतीश कुमार तब केन्द्र में मंत्री थे। वही जद (यू.) के रामविलास पासवान एनडीए में शामिल होकर केन्द्र में मंत्री थे। उनका राजनीति जीवन नीतीश से अधिक लंबा था। वे **1969** में ही विधायक और **1977-1980** में सांसद बन चुके थे। जबकि नीतीश कुमार **1985** में विधायक बनें थे। रामविलास पासवान जहाँ विश्वनाथ प्रताप सिंह के सरकार में कैबिनेट मंत्री थे वही नीतीश कुमार राज्य मंत्री थे। रामविलास पासवान तो **1996-98** के दौर में एच.डी. देवगौड़ा एवं इंद्र कुमार गुजराल की संयुक्त मोर्चा सरकारों में कैबिनेट मंत्री रह चुके थे। साथ ही दलित नेता के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे और वरिष्ठता का भी दावा था। राजग में नेतृत्व की प्रतिस्पर्धा और कलह का मुख्य कारण यही था। जार्ज फर्नांडिस ने झामुमो के शिबू सोरेन से समर्थन प्राप्त करने के लिये प्रयत्न किया। कुछ निर्दलियों के समर्थन का उपाय हुआ। किन्तु सीपीआई और माले, ऐसी सरकार को समर्थन के लिए तैयार नहीं थे जिसमें भाजपा शामिल हो।

फिर भी नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बनाए गए, उनकी सरकार में भाजपा से सुशील कुमार मोदी और जद (यू) से पशुपति कुमार पारस को उप-मुख्यमंत्री बनाया गया। मुख्यमंत्री को नवगठित विधानसभा में विश्वासमत हासिल करना था। सदन की कार्यसूची में विश्वासमत के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष का निर्वाचन होना था।

कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गाँधी बिहार में एनडीए सरकार गठित होने के प्रबल विरोधी थी। कांग्रेस के प्रदेश नेतृत्व और **23** निर्वाचित विधायक राजद के सरकार को समर्थन देने के पक्ष में नहीं थे। केन्द्रीय नेतृत्व ने उन्हें **324** सीटों पर चुनाव लड़ने की अनुमति दी थी। केन्द्रीय पर्यवेक्षक मोहसिना किदवई के अथक प्रयास से कांग्रेस के विधायक तभी रोके जा सके, जब उनमें से प्रत्येक को मंत्री बनाने का वादा किया। कांग्रेस के वरिष्ठ विधायक सदानंद सिंह को विधानसभा अध्यक्ष पद का आश्वासन दिया गया। अब राजद के समर्थक विधायकों की संख्या **251** हो गई थी। तो यूजीडीपी एवं झामुमो का समर्थन आसानी से जुटाया जा सका। बसपा, सीपीआई (माले) तथा एमसीसी राजद सरकार को बाहर से समर्थन देने पर सहमत हुई। निर्दलीय भी बंट गए। इसी पृष्ठभूमि में संपन्न विधानसभा अध्यक्ष के चुनाव में कांग्रेस के सदानंद सिंह ने जद(यू.) के गजेन्द्र प्रसाद हिमांशु को पराजित किया और राबड़ी देवी सरकार के गठन का मार्ग प्रशस्त हुआ। तब से बिहार में गठबंधन सरकार का दौर जारी है। उस समय **91** वें संविधान संशोधन अधिनियम नहीं था। जिससे मंत्रियों की संख्या की कोई सीमा नहीं थी। राबड़ी देवी सरकार में **70** से अधिक मंत्री बनंे। एक को

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

छोड़कर कांग्रेस के सभी विधायक मंत्री बन गए थे। यूजीडीपी और क्रांतिकारी साम्यवादी पार्टी के सदस्य भी मंत्री बनी थी। मंत्रीमंडल का यह स्वरूप **2003** के उपरोक्त संशोधन आने तक बनी रही। इस बीच **15** नवम्बर**, 2000** को बिहार के विभाजन से पृथक झारखंड राज्य का गठन हो चुका था। छोटा नागपुर और संथाल परगणा के विधायक झारखंड विधानसभा के सदस्य बन चुके थे। बिहार विधानसभा की दलीय स्थिति में नवम्बर **2000** के पश्चात् महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। भाजपा के काफी विधायक झारखंड में चले गए। जबकि राजद के काफी कम विधायक ही गए। ऐसे में बदली विधानसभा में राजद अपेक्षाकृत मजबूत स्थिति में थी। सहयोगियों पर उसकी निर्भरता कम हो गई थी। इस कारण **2003** के संविधान संशोधन लागू होने पर मंत्री की छटनी पर प्रश्न उठा**,** तो लालू प्रसाद को ज्यादा परेशानी नहीं हुई। इस प्रकार राबड़ी देवी की सरकार **2000-2005** तक निष्कंटक चलती रही। केन्द्र में भी **2004** के लोकसभा चुनाव में एनडीए के पराजय के बाद संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) की सरकार गठित हो गई।

अब यदि गठबंधन की संस्कृति की दृष्टि से वर्ष 2000 से 2005 तक की अवधि में बिहार की राजनीति का विश्लेषण किया जाये तो वह सरकार अवश्य गठबंधन की थी। कई महत्वपूर्ण विभाग कांग्रेस को दिये गए थे। परन्तु आम जन में यही धारणा थी कि यह लालू प्रसाद की, राष्ट्रीय जनता दल की सरकार है। मुख्यमंत्री के रूप में राबड़ी देवी भले ही थी पर सरकार का रिमोट कट्रोल लालू प्रसाद और उनके विश्वस्त प्रशासनिक पदाधिकारी मुंकुद प्रसाद के हाथों में थी। जगदानंद सिंह, तुलसी सिंह, शंकर प्रसाद टेकरीवाल, रामचन्द्र पूर्वे गठबंधन सरकार में अपने विभागों के अतिरिक्त समन्वय का कार्य संभालते थे। 1996 में सांसद बनने के बाद डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह सरकार में नहीं थे और 1998 में रघुनाथ झा भी समता पार्टी में जाकर वर्ष-1999 में गोपालगंज से सांसद बन चुके थे। राबड़ी देवी के दो अनुज अनिरूद्ध प्रसाद उर्फ साधु यादव तथा सुभाष यादव प्रशासनिक मामलों में काफी हस्तक्षेप करते थें। इसकी शिकायत आम हो गई थी। गठबंधन के इस दौर की उल्लेखनीय उपलब्धि 23 वर्षों के बाद वर्ष 2001 में 73वें संविधान संशोधन के अनुसार त्रि-स्तरीय पंचायती राज संस्थाओं के लिये चुनाव संपन्न कराना माना जा सकता है 1993 से ही राज्य सरकार पर केन्द्र सरकार का जोर था।

राजग के वोटों में कमी के लिए कई कारण उत्तरदायी माने जा सकते हैं। पहला, मुख्यमंत्री पद को लेकर राजग के घटक दलों के नेताओं के बीच आपसी खींचतान के कारण मतदाताओं में राजग के प्रति उदासीनता आई। दूसरा, कई सीटों पर राजग का विद्रोही उम्मीदवार खड़ा होने से भी राजग के वोटों में बँटवारा हुआ। तीसरा, अन्य पिछड़ी जातियों पर लालू के इस दावे का भी कुछ प्रभाव पड़ा कि आपस में मुख्यमंत्री पद के लिए

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

लड़ते राजग नेताओं को सत्ता देने का मतलब ऊँची जातियों के वर्चस्व की वापसी होगी। इन सबका प्रभाव साफ तौर पर चुनाव नतीजों पर भी दिखा।3

वर्ष 2005 के विधानसभा चुनाव:-

केन्द्र में सत्तारूढ़ राजग को 2004 में बिहार में नए शक्तिशाली विपक्षी राजनीतिक गठबंधन से करारी शिकस्त मिली। इस गठबंधन को लालू प्रसाद यादव ने रामविलास के नेतृत्व वाली लोजपा और कांग्रेस के साथ गठजोड़ करके बनाया था। किन्तु, वर्ष 2005 के विधानसभा चुनाव के पहले ही बिहार में यह गठबंधन बिखर गया। फरवरी, 2005 में हुए विधानसभा चुनाव के परिणाम एक विभाजित जनादेश था। कोई राजनीतिक दल या गठबंधन को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। नतीजतन, राज्य में फिर से चुनाव कराने का विकल्प ही शेष बचा था।

इन्हीं सियासी परिस्थितियों में नीतीश कुमार के 'नवीन बिहार' अथवा 'नूतन बिहार' की परिकल्पना की संभावनाएं बनीं। वास्तविक अर्थों में उनके इस संकल्प को इस प्रकार की सियासत से उपजी परिस्थितियों ने संजीवनी प्रदान करने का कार्य किया और संभवतः इसके कारण ही नवंबर, 2005 के विधानसभा चुनाव में भाजपा और जद (यू) के गठबंधन को स्पष्ट जनादेश मिला। दूसरी तरफ लालू प्रसाद यादव और रामविलास पासवान वर्ष 2009 तक केंद्र के संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सरकार में शामिल रहे। नीतीश के नेतृत्व में बिहार में राजनीति की भाषा और व्याकरण में परिवर्त्तन प्रारंभ हुआ। राज्य में नीतीश कुमार अपनी साफ-सुथरी छवि के साथ न केवल सुशासन की आवश्यकता पर बल दे रहे थे, बल्कि अपने इस स्वप्न को साकार करने के लिए पहले नीतिगत योजनाएं और फिर उसके कार्यरूप को अमलीजामा पहनाने के लिए व्यापक स्तर पर पहल भी कर रहे थे। संभवतः इसके ही परिणामस्वरूप राज्य की प्रशासनिक अवसंरचना अथवा ढांचे को पुनर्जीवित किया गया और इसके सकारात्मक परिणाम भी आये। अचानक कुछ ही वर्षों में बिहार अपने अतीत के मिथक को तोड़ते हुए एक अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित राज्य के रूप में चर्चा में आने लगा। राज्य में समुचित और अपेक्षाकृत बेहतर विधि व्यवस्था के प्रति नीतीश कुमार का जोर था। उन्होंने इसे लेकर किसी प्रकार का समझौता नहीं किया और इसके उल्लंघन करने वाले अपनी ही पार्टी के कार्यकर्ताओं और नेताओं को भी जेल भेजने में किसी प्रकार की हिचकिचाहट नहीं दिखायी। इसके साथ ही उनकी सरकार ने विद्यालय में छात्रों और विशेषकर छात्राओं के नामांकन में वृद्धि के लिए अनेक सक्रिय और उपयुक्त नीतिगत उपाय किये। इसी के अंतर्गत विद्यालय जा रही लड़कियों के लिए साइकिलों के वितरण की व्यवस्था की गयी, यह पहल बिहार में जल्द ही प्रगतिसूचक बदलाव की तस्वीर के रूप में रूपांतरित हो गयी।4

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

नीतीश कुमार के मुख्यमंत्रित्व वाली इस राजग सरकार ने दलितों को 'दलित' और 'महादलित' दो वर्गों में वर्गीकृत कर दिया। ऐसा इसलिए किया गया, क्योंकि सरकार अपनी योजनाओं का लाभ उन वर्गों और लोगों को ही देना चाहती थी, जो वास्तविक रूप से इसके हकदार थे। वरना पूर्व में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जब समाज के सीमान्त और वंचित लोगों के लिए नीतिगत पहल और योजनाएं तो शुरू की गयीं, किन्तु उन्हें उनके लाभ प्राप्त नहीं हो सके। इसलिए, सरकार ने उक्त निर्णय लिया। इसके अंतर्गत इस सरकार ने दलितों की तत्कालीन 22 जातियों में से 21 जातियों को महादलित घोषित कर दिया। ये वे जातियां थीं, जो आर्थिक दृष्टिकोण से दुसाधों से काफी नीचे थीं। सरकार ने अल्पसंख्यकों, जैसे- मुस्लिमों, विशेषकर निम्न वर्गीय मुस्लिमों के बेहतरी और प्रगति के लिए अथक प्रयास किये। जबकि, मुख्य रूप से जोतेदारों की सुरक्षा के लिए सरकार ने भूमि सुधार संबंधी काश्तकारी विधेयक प्रस्तावित किया, जो बटाईदार विधेयक से ज्यादा लोकप्रिय था। किन्तु, कुछ राजनीतिक कारणों से इसे अमलीजामा नहीं पहनाया जा सका। जनता के एक बड़े भाग का समर्थन और सहयोग नीतीश कुमार को प्राप्त हुआ। क्योंकि उन्होंने विकास के ठोस प्रयास किए।5

एक ओर नीतीश कुमार की लोकप्रियता बढ़ी, वही दूसरी ओर रामविलास पासवान की लोकप्रियता में जो भारी कमी आयी थी, उसका कारण यह था कि राज्य की जनता अभी भी उन्हें इस बात के लिए जिम्मेदार मानती थी कि फरवरी, 2005 के विधानसभा चुनाव के बाद रामविलास पासवान की सरकार के गठन में, जो निर्णायक स्थिति बनी थी और इस परिस्थिति में उन्होंने जिस प्रकार का रवैया अपनाया था, उससे बिहार की जनता उनसे खफा हो गयी थी और दोबारा चुनाव के लिए उन्हें ही जिम्मेदार मानती थी। किन्तु, उन्होंने सरकार बनाने में सहयोग नहीं दिया और अंततः फिर से चुनाव कराने का विकल्प ही शेष बचा।6

बिहार में नेतृत्व का प्रभाव:-

'महागठबंधन' अथवा 'ग्रैंड अलायन्स' की शानदार जीत का एक कारण नेतृत्व विशेषकर नीतीश कुमार की लोकप्रियता थी। कुछ राजनीतिक विश्लेषकों का भी यह मानना था कि मतदाताओं के बीच केंद्र और राज्यों के लिए अलग-अलग राजनीतिक दलों के चयन का रुझान आम है। दिल्ली विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद भी इसी प्रकार के विचार व्यक्त किये गये थे।7 इन चुनावों में निश्चित रूप से नीतीश कुमार के पक्ष में नेतृत्व ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। मुख्यमंत्री के रूप में उनके साफ रिकार्ड और विकास के मुद्दे को अपेक्षाकृत अधिक तरजीह देने की प्रवृत्ति ने उनके लिए सकारात्मक संभावनाएं बनायीं। करीब **40** प्रतिशत लोगों ने नीतीश कुमार को ही अपनी मुख्यमंत्री के रूप में पसंद बताया। जबकि सुशील कुमार मोदी और लालू प्रसाद यादव मुख्यमंत्री के रूप में करीब **14** प्रतिशत और सात प्रतिशत लोगों की ही पसंद थे। उन तीन-चौथाई मतदाताओं में भी जिन्होंने महागठबंधन के लिए मतदान किया था, अपने मुख्यमंत्री के

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

उम्मीदवार के रूप में नीतीश कुमार का चयन किया। जहां तक राजग का सवाल था, तो ऐसे मतदाताओं के करीब एक-तिहाई लोगों ने सुशील कुमार मोदी तथा अन्य एक-चौथाई जीतन राम मांझी और रामविलास पासवान को अपने मुख्यमंत्री के रूप में पसंद किया। वस्तुतः 'महागठबंधन' ने जिस प्रकार मुख्यमंत्री के रूप में अपने उम्मीदवार की आधिकारिक घोषणा की, उसका सीधा असर चुनावों में देखा जा सकता था।**8**

नीतीश कुमार को भी ऐसे मुख्यमंत्री के रूप में माना गया, जो पिछले सभी मुख्यमंत्रियों से बेहतर थे। करीब आधी से अधिक आबादी ने उन्हें अपेक्षाकृत सबसे योग्य मुख्यमंत्री माना।

नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री के अपने उम्मीदवार के रूप में आधिकारिक घोषणा करने के निर्णय की रणनीति ने अवश्य ही 'महागठबंधन' को लाभ पहुंचाया, किन्तु दूसरी तरफ राजग ने यह निर्णय लिया कि वह चुनाव के पहले मुख्यमंत्री के रूप में अपने प्रत्याशी की घोषणा नहीं करेगी और वास्तव में यह चुनाव नरेंद्र मोदी के नाम पर ही लड़ा जाएगा। संभवतः यही कारण रहा होगा, जिसके परिणामस्वरूप राजग को इतनी बुरी पराजय का सामना करना पड़ा। यद्यपि और वास्तव में भाजपा के पास कोई ऐसा चेहरा ही नहीं था, जो कि नीतीश कुमार के करिश्माई व्यक्तित्व के जोड़ का होता, तथापि वह अपने सहयोगियों के समर्थन और सहयोग से मुख्यमंत्री के अपने उम्मीदवार की आधिकारिक घोषणा तो कर ही सकती थी। बहरहाल, राजग के मुख्यमंत्री के रूप में अपने उम्मीदवार की घोषणा की थी। यह कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा कि यह चुनाव नीतीश कुमार बनाम नरेंद्र मोदी में तब्दील हो गया था। किन्तु, यहां तक कि मोदी का यह नाम भी राजग की कोई सहायता नहीं कर सका।

दरअसल, जब मतदाताओं से विभिन्न संकेतकों के आधार पर मोदी और नीतीश कुमार को मूल्यांकित करने को कहा गया तो उन्होंने विकास, बेरोजगारी-निवारण, अपहरण और गुंडागर्दी पर लगाम लगाने और अगड़ों और पिछड़ों तथा हिंदुओं और मुस्लिमों के बीच भाईचारा बनाये रखने जैसे सभी पांच आयामों के मामलों में नीतीश कुमार को मोदी की तुलना में बेहतर बताया। स्पष्टतः लोगों को नीतीश कुमार पर अत्यधिक विश्वास था और इसी ने आगे 'महागठबंधन' को शानदार जीत दर्ज करने में बड़ी सहायता दी।

वर्ष **2017** के मध्य में एक बड़ा बदलाव आया। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया और इस तरह राजद के साथ अपना गठबंधन खत्म कर उससे अपना नाता तोड़ लिया। लेकिन, **24** घंटे के भीतर उन्होंने दोबारा मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली। राजद से अलग होने के बाद नीतीश कुमार अपने पुराने सहयोगी भाजपा के पास लौट आए। राजद के साथ रिश्ता तोड़कर नीतीश कुमार ने भाजपा के साथ मिलकर सरकार बनाया। तेजस्वी यादव के खिलाफ भ्रष्टाचार का आरोप और फिर सीबीआई के छापे

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

गठबंधन के टूटने का अंतिम कारण बना। पर यह बात भी किसी से छिपी नहीं थी कि सरकार बनाने के बाद से ही दोनों के बीच बेहतर तालमेल नहीं था।

2024 के लोकसभा चुनाव में एक ओर एनडीए तो दूसरी ओर ''इण्डिया एलायंस'' के बीच संघन प्रतियोगिता हुई। इण्डिया एलायंस में राजद के साथ कांग्रेस तीनों वामदल- सीपीआई, सीपीएम, माले तथा वीआईपी शामिल रहे। जबकि एनडीए में भाजपा और जद (यू.) के अतिरिक्त लोजपा, हम और राष्ट्रीय लोक मोर्चा शामिल रही। चुनाव परिणाम इस प्रकार रहे एनडीए को **30,** इण्डिया एलायंस को-**9,** जबकि निर्दलीय एक-**1** ही सीट जीत सकी। लेकिन तीन लोकसभा सीटों पर उम्मीदवार विशेष और क्षेत्र विशेष की पृष्ठभूमि के कारण निर्दलीय उम्मीदवार भी मुख्य प्रतियोगिता में शामिल रहे। इनमें पूर्णिया सीट उल्लेखनीय है जहाँ उस सीट के पूर्व सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में विजय हुए। जहाँ 'इण्डिया एलायंस' के उम्मीदवार प्रतियोगिता से पूर्णतः बाहर हो गया। दो अन्य निर्दलीय उम्मीदवारों ने काराकाट और सीवान में प्रमुख गठबंधन के उम्मीदवार को तीसरे स्थान पर पहुँचा दिया। काराकाट में एक भोजपुरी फिल्म अभिनेता ने एनडीए के उम्मीदवार को, तो सीवान में पूर्व सांसद की पत्नी के उम्मीदवारी के कारण राजद उम्मीदवार तीसरे स्थान पर चले गये। किन्तु उसे अपवाद ही मानना चाहिए। बिहार की बहुदलीय व्यवस्था में तीन प्रमुख और अन्य दलों की इससे धुरवीकृत बहुलवाद का स्वरूप प्रदान किया है इसके दो-धुरव एनडीए और इण्डिया एलायंस ही हैं।

अतः समकालीन बिहार की राजनीति गठबंधन की संस्कृति से पूर्णतः प्रभावित हैं आनेवाले दशक में भी यही प्रवृति विद्यमान रहेगा ऐसा प्रतीत होता है।

निष्कर्ष:

वर्ष **2000** के पश्चात् बिहार की आम जनता गठबंधन के पक्ष में खड़ी है। यह गठबंधन दो-धुरवीय है- एक तरफ एनडीए तो दूसरी तरफ महागठबंधन या इंडिया एलायंस है। इन दोनों धुरवों के प्रमुख धुरी बीच-बीच में बदलती रही है, फिर भी एक स्पष्ट लड़ाई कमोबेश एक जैसी ही बनी रही है। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि **2015-17** तथा **2022-24** तक जद (यू) अपनी धूर विरोधी राष्ट्रीय जनता दल के साथ मिलकर चुनाव लड़ती है और सरकार चलाती है। इन वर्षों के अतिरिक्त वर्ष-**2000** से अब तक जद (यू) एनडीए का महत्वपूर्ण हिस्सा बनी रहती है। इन सबके बावजूद बिहार की राजनीति में गठबंधन की संस्कृति के प्रति आम-आवाम सहित राजनीतिक दलों, विश्लेषकों आदि में कोई विशेष नकारात्मक भाव नहीं है। जब गठबंधन की संस्कृति पर दृष्टिपात करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि विगत **2000** से दोनों गठबंधन का मुख्य आधार राजद, जद (यू) एवं भाजपा ही है। इन तीनों दलों के मध्य ही गठबंधन बनती बिगड़ती रही है,

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

जिसमें राजद एवं भाजपा अपनी जगह पर ही रहते हैं तथा जद (यू) का स्थान परिवर्तन हो जाता है। यह स्थान परिवर्तन बिहार की सत्ता परिवर्तन के लिए भी जिम्मेवार रही है।

संदर्भ-सूची:-

1. संजय कुमार, बिहार की चुनावी राजनीति जाति-वर्ग का समीकरण (**1990-2015**), सेज भाषा फारवर्ड प्रेस, नई दिल्ली, **2019**, अध्याय-**6**, पृ. **271-309**, अध्याय-**7**, पृ. **309** से **345**, अध्याय-**8**, पृ. **345-384**
2. कमल नयन चौबे, जातियों का राजनीतिकरण (बिहार में पिछड़ी जातियों के उभार की दास्तान), वाणी प्रकाशन, **21**ए दरियागंज, नई दिल्ली, **2008**, अध्याय-**6**, पृ. **203-253**, अध्याय-**7**, पृ. **255-263**
3. संजय कुमार, ‘‘बिहार एसेम्बली एलेक्षन: आर.जे.डी. नीड्स सन् अलायंस फॉर विकटरी’’ इकोनोमिक एंड पॉलिटिकल वीकली-**15** जनवरी-**2006**, पृ. **191**
4. उद्धृत संजय कुमार, अन पेड लेबर, यादव, **2010**, पृ. **276**
5. उद्धृत संजय कुमार, कुमार और रंजन, **2009**, पृ. **277**
6. उद्धृत संजय कुमार, कुमार, **2008**, पृ. **277**
7. उद्धृत संजय कुमार, टाइम्स ऑफ इंडिया, नवम्बर **8, 2016**, पृ. **371**
8. उद्धृत संजय कुमार,शास्त्री और अत्री, द इंडियन एक्सप्रेस, **2015**, पृ. **372**

The Asian Thinker